114
530
P
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1186/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 530

891.431
B88L

* वन्देमातरम् *

# लाहौर की फाँसी

उर्फ

## भगतसिंह का तर्राना

दरो दीवार पे, हसरत से नज़र करते हैं।

खुश रहो अहले वतन, हम तो सफ़र करते हैं॥


संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक—

एन० एल० ए० "बसलट"

ब्रह्मनाल, बनारस सिटी।



सर्वाधिकार सुरक्षित।



प्रथम बार ] १९३१ [ मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 530
Date 13.12.71
GOVT. OF INDIA

14 DEC 1931

# लाहौर की फाँसी

उर्फ़

## भगतसिंह का तराना

( १ )

रङ्ग अब लाने को है ये फाँसी लाहौर की।
दुश्मन को झुकाने को है फाँसी लाहौर की॥
बैठे थे हम सभी समझौते की ओट में।
परदा सुलह हटाने को है फाँसी लाहौर की॥
सींचा है लीडरों ने इसे अपने खून से।
हक अपना चुकाने को है फाँसी लाहौर की॥
जब वीर भगत ऐसे यहाँ बलिदान हो चुके।
मुरदों में जान लाने को है फाँसी लाहौर की॥
आवेगी याद देखले बमलट ये उम्र भर।
हरगिज न ये भुलाने को है फाँसी लाहौर की॥

( २ )

आओ सभी मिल के जय माँ पुकारें।
माँ का सुयश आज जग में पसारें॥

( ३ )

माता करें दूर तसबी भी रख देवें।
खाके वतन का तिलक सिर पर धारें॥
गाँधी व तैय्यब पुजारी बने इनके।
माता के मन्दिर में हम सब पधारें॥
काबा व काशी मिलें एक संग दोनों।
तन मन व धन को भी माता पै वारें॥
गङ्गा व जम जम बहें एक सङ्ग दोनों।
मक्का व मथुरा में जय माँ पुकारें॥
शर्म्मा भनत आज हिन्दु मुसलमान।
आरति मिल जुल के माँ की उतारें॥

( ३ )

मादरे हिन्द न हो गमगीं
अच्छे दिन आने वाले हैं।
आजादी का पैगाम तुझे
हम जल्द सुनाने वाले है॥
मां तुझको जिन जल्लादों ने
दी है तकलीफ जईफी में।
मायूस न हो मगरूरों को
हम मजा चखाने वाले हैं॥
हिन्दू व मुसल्मां मिलकर के
चाहे जो हम कर सकते हैं।

ऐ चर्ख कुहन हुशियार हो तू
पुरशोर हमारे नाले हैं ॥
मेरी रूह को करना कैद कतल
इख्तियार से बाहर है उनके ।
आजाद है अपना दिल शैदा
गो लाख जुबाँ पर ताले हैं ॥
मगलूब जो हैं होंगे गालिब
महकूम जो है होंगे हाकिम ।
यहाँ एकसा वक्त रहा किसका
कुदरत के तौर निराले हैं ॥
गांधी ने तर्क ता आ उनका
यह कैसा मंत्र सिखाया है ।
लरजा है जिससे अर्ज समाँ
सरकार की जान के लाले हैं ॥

करांची की कांग्रेस ॥४॥

भारत में गुल खिलाये करांची की कांग्रेस ।
परतन्त्रता मिटाये करांची की कांग्रेस ॥
बलिदान जहां होगये सरदार भगत वीर ।
फिर क्यों न रङ्गलाये करांची की कांग्रेस ।
खुश किस्मती सदर हुये मोती से जवाहर ।
सर ताजे खार रखाये करांची की कांग्रेस ॥

( ५ )

साहब का जाल खोल दिया गोलमेज ने।
अब चाल में न आये करांची की कांग्रेस॥

चक्कर रगो में खार हो अपने वतन का खूँ।
मुर्दों को भी जिलाये करांची की कांग्रेस॥

विराम सन्धि का न वहां इन्तजार हो।
बल अपना आजमाये करांची की कांग्रेस॥

पूरी स्वतन्त्रता लिये बिना हम न हटेंगे।
ऐलान यह सुनाये करांची की कांग्रेस॥

तैयार होके जाना ओ भारत के सपूतों।
शर्म्मा अब नाम पाये करांची की कांग्रेस॥

( ५ )

करते कठिन काम काम पड़ जाने पर,
कब दहलाते हम भ्रान्ति भय हारी हैं।
आततायी के हैं अरि अनुयायी गांधीजी के,
हैं शर्मा कवि राष्ट्र के सिपाही सहकारी हैं॥
सीना खोल जाते सन्मुख हो गन गोली के,
वीर व्रतधारी हैं अहिंसा अवतारी हैं।
दासता के नाशक प्रकाशक हैं प्रति भाके,
शान्ति के उपासक हैं क्रान्ति के पुजारी हैं॥

### पञ्जाब के कैदियों का उद्देश्य ॥७॥

वीर फांसी पै चढ़, लाहौर के सुनाते हैं।
आदाब हिन्द बासियों, ये आखिरी बजाते हैं॥
याद दिल से मेरी, न दोस्तो भुलाना कभी।
हम तो जाते हैं मगर, इतना कहे जाते हैं॥

सिवा ईश्वर के नहीं, डरना किसी से प्यारे।
गुण दिलेरों में सदा, येही पाये जाते हैं॥
मरना कहते हैं किसे, ये ख्याल में लाते ही नहीं।
खुशी से मौत को, सीने से हम लगाते हैं॥

रंज करना न मेरा, करना काम शहीदों का।
लाडले हिन्द के, ये आप बस कहाते हैं॥
लूट कर खांय हमें, ये हैगी हुकूमत कैसी।
दिल तो झुकता ही नहीं, सर को क्यों झुकाते हैं॥

राह जन्नत की सहल, इससे नहीं है आला।
देश कार्य्य कर जो, फांसी पै लटक जाते हैं॥
वीर रावण से गए, हस्ती है ये उदू की क्या।
जां गवाये बिना, कहीं स्वर्ग कोई पाते हैं॥
भाव वीरों के ये, दिल का कहा 'बसलट' ने।
भगत सिंह इत्यादि का, उद्देश ये बताते हैं॥

आखिर फांसी हो गई ॥८॥

कोशिश खाली गइ न रिहाई भई।
आखिर फांसी ये उनको लगाई गई ॥
प्रार्थना ये हिन्द कि किस तौर ठुकराई गई।
हो गई आखीर फाँसी कुछ न सुनवाई हुई ॥
शान भारत कि कैसी घटाई गई ॥
छोड़ते किस तौर उनको खौफ था इस बातका।
जिन्दें रहे गर बीर ये मौका लगे न घात का ॥
कारण येही कि न सुनवाई हुई ॥
ये नहीं सोचा उन्होंने अन्याय की कब खैर है।
ए प क। घट भर चुका अब फूटने की देर है ॥
फाँसी बेवक्त उनको लगाई गई ॥
तीन के फाँसी चढे क्या हिन्द सूना होगया।
बीर तो सुर पुर गए पर आग दूना हो गया ॥
शान्त प्रजा में खलबल मचाई गई ॥
उनके मिटाए क्या हुआ इसकी न गर तदबीर है।
हर भारतीके दिल पै उनकी जो खिची तसबीर है।
कुछ न किया गर न वो मिटाई गई ॥
आजादगी का सैदा था वो वीर बस दिल जान से
उद्देश्य था उसका यही क्यों हम डरें शैतान से ॥
जब कि हैगी हमारी खताई नहीं ॥

जालिमों को जुल्म का फल हर समय देता रहा।
लाल पर्चे बांट थानों में यही कहता रहा॥
छोड़ो अधर्म क्या पड़ता सुनाई नहीं।
धन्य है भारत को 'बमलट' हों जहां ऐसे बसर।
चढ़ गए फाँसी पर तीनों नाग अपना कर अमर॥
प्रशंसा जगत जिनकी छाई रही॥

दीवानाय वतन ॥९॥

आजादी का दीवाना था सरदार भगतसिंह।
फांसी पर गया झूल वो सरदार भगतसिंह॥
आलम की एक सान था मस्ताना भगतसिंह।
हम वागी का अरमान था सरदार भगतसिंह॥
लाहौर का रहने वाला था वो शेरोबबर दिल।
आजादी की थी चाह उसे सरदार भगतसिंह॥
देता था लाल परचा वो लाहौर के थानों में।
हो जावो सावधान ये कहता था भगतसिंह॥
होती थी मीटिंग असम्बली में जिस दम फेंका बम।
इस केश में पकड़ा गया सरदार भगतसिंह॥

भारत की चीत्र ॥१०॥

मानी न ये किसी कि भी फाँसी उन्हें चढ़ा दिया,
प्रार्थना ये हिन्द कि मिट्टी में बस मिला दिया।

हर तौर से ये हम कहा, ना आई तुमको है दया,
अब तुमसे हमको क्या गरज जब तूने हमें मिटा दिया॥
कहती है माता कर रुदन, कहाँ है हमारा मूल धन,
गोदी से मेरे छीन कर किसने उसे हटा दिया।
कैसा खुदा ये है कहर, होता न दिल को है सबर,
भारत ने ऐसे चीख कर आंखों से जल बहा दिया।
जालिम ये तूने क्या किया, जो फाँसी उसे चढ़ा दिया,
सोते थे शेर हिंद के नाहक इन्हें जगा दिया।
कैसे तुम्हरी हो गुजर, करते हो भारी तुम जबर,
कहीं पैदा न वैसा और हो फांसी जिसे चढ़ा दिया॥
कैसे घटैगी ये अगिन, दूनी बढ़ेगी दिन ब दिन,
पानी के बदले तेल जब आतश में है गिरा दिया॥

भारतवासियों से फरियाद ॥११॥

भारतवासी बचाओ हम फरियाद भी हुए।
मुमकिन ना मुमकिन सभी इरसाद भी हुये॥
दागेसितम औ सखतिया बेदाद भी हुये।
जरमन की लड़ाई में बरबाद हम हुये॥
हम क्या बतावें किस कदर फरियाद हम हुये।
ये सब हुये पर एक ना आजाद हम हुये॥
जब जर की जरूरत पड़ी तब मैंने जर दिया।
जब सर की जरूरत पड़ी तब मैंने सर दिया॥

हाजत पड़ी बसर की तो मैंने बसर दिया।
खाली थैली इंगलैंड की भारत ने भर दिया।
मुसलिम से कहा गाय की कुरबानी तुम करो।
हिन्दू से कहा चुप क्यों हो जल्दी से लड़ मरो॥
फरमाया पुलिस वालों से कि इन दोनो को धरो।
मुद्दत से जेल खाली है इन दोनों को भरो॥
सरकार की इन चालों से बरबाद हम हुये।
ये सब हुये पर एक ना आजाद हम हुये॥

भगतसिंह की जीवनी

सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना।
हक करके अदा होगये सुर पुर को रवाना॥
लायल पुर एक जिला है पंजाब प्रान्त में।
१९०७ इस्वी को बस बंगा ग्राम में॥
सिक्ख जाति में उत्पन्न हुआ ये वीर दिलावर।
चाची ने इनको पाला था निज पुत्र के हमसर॥
बचपन ही से स्वभाव था बस इनका शेराना।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना॥
खेलते थे खेल ये निज टोली बनाकर।
करते थे युद्ध क्रीड़ा अपने साथी बुलाकर॥
कोई सैनिक बनता था कोई कमान्डर।
फिर लड़ते थे आपस में ज्यों लड़ते हैं बबर॥

साथियों को तो रोज़ ही था इनको हराना ।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फ़िसाना ॥

मामूली स्कूलों में जब पढ़ाई पढ़ लिया ।
तो राष्ट्रीय कालेज में पढ़ना शुरू किया ॥
थोड़ी २ भाषा जब सब इनने पढ़ लिया ।
एन्ट्रेंस तक ही अंग्रेजी बस पास है किया ॥
लेकिन बोलने में अँग्रेजी थे पूरे थे दाना ।
सुनिये जिगर थाम भगतसिंह का फिसाना ॥

इसी समय आन्दोलन ने ज़ोर है खाया ।
तो उनको भी देश सेवा का मौका है ये पाया ॥
भारत के कुछ नौजवानों को साथ मिलाया ।
नौजवान भारत सभा एक कायम कराया ॥
जन्म दाता आप इसके हैं यह है हमको बताना ।
सुनिये जिगर थाम भगतसिंह का फिसाना ॥

पिताजी ने शादी करने को जब जोर है दिया ।
ब्रह्मचर्य में रहूँगा ये भगतसिंह ने कह दिया ॥
कहने पै इनके ध्यान किसी ने न जब दिया ।
तो ठीक समय शादी के किनारा बस किया ॥
अब पहुँचे कानपुर किया बटुक से याराना ।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना ॥

इसी समय गंगा यमुना में बाढ़ जो आई।
तो हम राह बी०के० दत्तके हम दर्दी दिखाई॥
जोरों में दमन जारी था उस वक्त यां भाई।
तो देनों मित्रों ने मिल कर ये राय ठहराई॥
धमकी दे चहिये इनको किसी तौर डराना।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना॥

अन्यायों की करतूतों के लाल पर्चे छपाकर।
चिपकाते और बाँटते थानों में थे निडर॥
हो जावो हुशियार तुम ये कहते थे दर व दर।
ज्यादा करोगे जुल्म तो ढादेंगे हम कहर॥
अब रोज पुलिस वालों को था इनका चौंकाना।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना॥

१९२९ का अब ये सुन लीजिये जिकर।
होती थी मिटिंग असम्बलीमें बैठेसब अफसर॥
न मालुम किस तरकीबसे वहाँ पहुँचे ये नाहर।
बम का किया प्रहार निगाह सब की बचाकर॥
पकड़ा गया वहीं आजादी का दीवाना।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना॥

इजलास के ऊपर जब ये हाजिर किया गया।
पूछा बयान हाकिम ने तो इज़हार यों किया॥

मुस्तकील इरादे हैं हम नहीं डरते किसी से।
जेल काला पानी चढ़े फांसी खुशी से॥

हमारा है उद्देश्य विदेशी को भगाना।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना॥

सुनके बयान हाकिम ने ये फैसला किया।
ता उम्र काले पानी की इनको सजा दिया॥
फिर लाहौर षड़यन्त्र केस भी तय्यार हो गया।
तो फाँसीका हुक्म इनको तो इस बार होगया॥

२२-१०-३० को था इन्हें फाँसी चढ़ाना।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना॥

कुछ सोच लाट साहब ने ये मयाद बढ़ाई।
अपील भी खारिज हुइ जो किशनसिंहने कराई॥
लेकिन अरविन समझौतेने कुछ आस दिलाई।
इसलिये ही प्रजा ने यह दरख्वास लगाई॥

कुल प्रजा की प्रार्थना पर ध्यान था लाना।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना॥

नीम को गुड़ घी में चाहे कितना पकाओ।
होने से रहा मीठो कितना भी जतन कराओ॥
इसी तरह जालिम ने हमको रुला दिया।
तेइस मार्च इकत्तीस को फाँसी लगा दिया॥

दिल कांपता है आगे यह अब लिखते तराना ।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना ॥

शहर दर शहर चोबीस को पहुँची है ये खबर ।
मच गया हर शहर में उस दमही बस कहर ॥
हरताल हुई कुल शहरोंमें बस मिन्टोंके अंदर ।
रोते थे हरेक बुड्ढा बालक बो नारी नर ॥

सबके जिगर पर रंज भगतसिंह का समाना ।
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना ॥

कायम है दुनियाँमें जबतक पृथ्वी और आकाश ।
शहीदोंकी हो अमर कीर्ती, हर दम करे प्रकाश ॥
भोगें सदा स्वर्ग की सुख उनकी आत्मा ।
बमलट की बिनय यह सुन लीजे परमात्मा ॥

धन्य हैं माता पिता धन्य है घराना ।
जिस बंश में पैदा हुआ यह वीर मरदाना ॥
सुनिये जिगर थाम भगत सिंह का फिसाना ।
हक करके अदा होगये सुर पुर को रवाना ॥

## गज़ल

तुम राम कहो वो रहीम कहें दोनों की गरज़ अल्लाह से है ।
तुम दीन कहो वो धर्म कहें मन्शा तो उसी की राह से है ॥
तुम इश्क कहो वो प्रेम कहे, मतलब तो उसी की चाह से है ।
यह जोगी हो तुम सालिक हो मकसूद दिले आगाह से है ॥

क्यों लड़ता है मूरख बन्दे यह तेरी ख़ाम ख़याली है।
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मजहब एक एक डाली है॥
बनवाओ शिवाला या मसजिद है ईंट वही चूना है वही।
मेमार वही मज़दूर वही मिट्टी है वही चूना है वही॥
तकबीर का जो कुछ मतलब है, नाकूस का भी मन्शा है वही।
तुम जिनको नमाज़ कहते हो, हिन्दू के लिये पूजा है वही॥
फिर लड़ने से क्या हासिल है, ज़ीफहम हो तुम नादान नहीं।
भाई पै दौड़े गुर्रा कर वो हो सकते इनसान नहीं॥
क्या क़त्ल वो ग़ारत खूँरेज़ी तारीफ यही ईमान की है।
क्या आपस में लड़कर मरना, तालीम यही कुरआन की है॥
इन्साफ़ करो तफ़सीर यही क्या वेदों के फ़रमान की है।
क्या सचमुच यह खूँ ख़ारी ही आला ख़सलत इनसान की है॥
तुम ऐसे बुरे आमालों पर कुछ भी तो खोदा से शर्म करो।
पत्थर जो बना रखा है शहीद इस दिलको ज़रा तो नर्म करो॥

* इति *

मुद्रक—
मथुरा प्रसाद गुप्त,
'श्री' यन्त्रालय, लक्ष्मीचौतरा, काशी।